शांति शिक्षा के संदर्भ में बौद्ध दर्शन का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

शिक्षाशास्त्र विषय में

पी–एच0डी0 उपाधि की

प्रतिपूर्ति हेतु

आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय मेरठ

को प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोध पर्यवेक्षक
डॉ0 संजीव कुमार
प्रोफेसर
कॉलिज ऑफ ऐजूकेशन,
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ

शोधार्थिनी
सरिता कुमारी
नामांकन संख्या– **IIMTU/A-4204**

–: शोध केन्द्र :–

कॉलिज ऑफ ऐजूकेशन

आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय मेरठ, उत्तर प्रदेश (भारत)

1. प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्ययन बौद्ध दर्शन के विचारों एवं नियमों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन वर्तमान परिवेश में शांति शिक्षा में किस प्रकार सहयोग प्रदान कर सकता है कि ओर लक्षित है। इस शोध अध्ययन का केन्द्रीय बिन्दु बौद्ध दर्शन में विद्यमान उन तत्वों एवं कारकों एवं महत्वपूर्ण अनुमानों को खोजना तथा उनका विशलेषण करना है, जो शांति शिक्षा में सहायक है। महात्मा बौद्ध ने **अप्प दिपो भव** के संदेश द्वारा मानव के उस अस्तित्वगत बोध की ओर संकेत किया है। जो इसके स्व की पहचान को इंगित करता हैं इस स्व के बोध के बिना मानवीयगुणों का अस्तित्व एवं विकास असंभव है और मानवीय गुणों के मानव शब्द ही निरर्थक सिद्व हो जाता है।

शिक्षा द्वारा मानव के चरित्र एवं मन का विकास होता है और इसी के द्वारा अपनी अन्तर्निहित क्षमता को उजागर करने में सक्षम हो पाता है शिक्षा द्वारा ही मनुष्य समाज में समायोजन के लिए आवश्यक ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करता है। शिक्षा मानव जाति के विकास का मूल –मंत्र है, इसके माध्यम से ही व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का विकास संभव होता है। अतएव ज्ञान का उदेश्य मनुष्य, सोसाईटी के दृष्टिगत निर्धारित किया जाता है। शिक्षा स्थिर ना होकर गतिशील प्रक्रिया है अर्थात् इसके उदेश्य में समाज की आवश्यकतानुसार निरंतर बदलाव होता रहता है। शिक्षा जीवन की कायापलट कर देती है, जैसा कि संयुक्त राष्ट्र की शांतिदूत **युसुफजई** ने एक बार कहा था **एक बच्चा, एक शिक्षक** एक किताब और एक कलम दुनिया बदल देते है। **नेल्सन मंडेला** ने शिक्षा को **शक्तिशाली हथियार** कहा था जिसमें आप दुनिया को बदलने के लिए इस्तेमाल कर सकते है। शिक्षा व्यक्ति को जीविकोपार्जन के लिए तैयार करने का, मानव के पर्सनेलिटी का सर्वागीण विकास का साधन है। दूसरे ‘शब्दों में ऐजूकेशन किसी सोसाईटी में सदैव गतिशील सोदेश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जोकि मनुष्य की पैदायशी शक्तियों का संवर्द्धन उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्वि एवं बर्ताव में बदलाव किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं जिम्मेदार नागरिक बनाया जाता है। ऐजूकेशन प्रभावी रूप से सशक्त उपकरण है, जोकि जनमानस के मन– मास्तिष्क में विश्वनागरिकता की भावना उत्पन्न किया जा सकता है। **मारिया माण्टेसरीके अनुसार–सारी शिक्षा शांति के लिए ही है।**

शांति शब्द अपने उत्पति, एवं कोशागत अर्थ में ध्वनि मुक्त ‘शोर गुल मुक्त या शांत होने की अवस्था या भाव है। **श्री अरविन्दों के अनुसार** शांति का अर्थ गहन शांति जिसमें कोई विध्न या बाधा न हो तथा सुरक्षा का भाव निहित हो से है (आर0 ए0 ‘शर्मा (2002 मानव मूल्य एवं शिक्षा पृष्ठ सं0 –236)। शांति का व्यक्तिगत, सामाजिक,राजनैतिक विभिन्न क्षेत्रों मे विभिन्न परिसितियों में विभिन्न अर्थ है। जहाँ व्यक्तिगत तौर पर शांति मन की वह अवस्था है, जिसमें दुखः विषाद उद्वंग, क्षोभ आदि के लिए के कोई स्थान न हो। सामाजिक क्षेत्र समाज की वह अवस्था जो असमानता, अन्याय , हिंसा, मार–पीट लड़ाई

–झगड़े से मुक्त हो शांति पूर्ण क्षेत्र कहलाता है। वहीं राजनैतिक क्षेत्र में 'शांति से तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें राज्य, राष्ट्र आपसी प्रेम भाई–चारा ,सद्भावना के साथ बगैर लड़ाई–झगड़े एवं आपसी मन–मुटाव के साथ एक देसरे का परस्पर सहयोग करते हुए आगे बढ़ते हैं। 'शांति किसी भी मनुष्य , समाज की प्रगति की पहली आवश्यक है बौद्ध दर्शन के पंचशील का प्रत्यय अंतराष्ट्रीय सह – अस्तित्व के लिए आवश्यक है, इसमें शांति का स्थान सर्वोच्च है। इसके द्वारा विश्व बंधुत्व **वसुधैव–कुटुम्बकम्** को स्थापित किया जा सकता है। आधुनिक युग में विश्व में अंतर्राट्रीयता, वैश्वीकरण की प्रवृति को बढावा दिया जा रहा है , क्योंकि विज्ञान एवं तकनीकी विकास ने देशों के बीच की दूरियों को कम कर दिया है, वही दूसरी ओर परस्पर निर्भरता को बढ़ावा दिया है। **स्वामी विवेकानन्द** के शब्दों में समाष्टि स प्रेम किए बिना हम व्यक्ति से कैसे प्रेम कर सकते हैं । ईश्वर ही वह समष्टि है सारे विश्व को यदि एक अखण्ड रूप से चिन्तन किया जाए तो वही ईश्वर है उसे पृथक –पृथक रूप से देखने पर वही यह दृश्यमान संसार है ।समष्टि के माध्यम से ही सारे विश्व को प्रेम करना संभव है।

2. **शांति शिक्षा का प्रत्ययः** आज सर्वत्र असहिष्णुता, कट्टरवाद, अराजकता, भ्रष्टाचार का समाज में बोलबाला हो गया है जिससे वैमनस्य, संघर्ष, हिंसा, युद्ध में निरंतर वृद्धि दिख रही है। अतः स्कूली पाठ्यचर्या के ढ़ाँचे में शांति शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। शांति शिक्षा, शिक्षा की एक ऐसी शाखा है, जो मानव के चरित्र में मूल्यों को उच्च, दृष्टिकोणों एवं कौशलो के विकास पर बल देती है जो प्रकृति एवं मानव जगत के बीच संतुलन के लिए, समायोजन के लिए आवश्यक है। शांति शिक्षा एक ऐसी नियोजित रणनीति है, जिसके द्वारा समाज में व्यापत असमानता, अन्याय, संघर्ष, हिंसा को समाप्त किया जा सकता है। शांति शिक्षा बालक की संकीर्ण मानसिकता से निकलकर विश्व–बंधुत्व की ओर अग्रसर करने का साधन है। गाँधी जी के अनुसार–अगर हम विश्व को वास्तविक शांति का पाठ पढाना चाहते हैं तो हमें शुरूआत बच्चों से करनी होगी।शांति शिक्षा की कोई एक परिभाषा नहीं है जो सर्वमान्य हो क्योंकि यह संकीर्ण नहीं बल्कि एक व्यापक अवधारणा है।

जॉन डीवी के अनुसार शांति शिक्षा सक्रिय नागरिकता पर आधारित है, शिक्षार्थियों को लोकतंत्र में भागीदारी के लिए तैयार करना, समस्या के माध्यम से और समस्या–शिक्ष को हल करना तथा हमारे समाजों मे परिवर्तकारी कार्रवाई के लिए प्रतिबद्धता । अर्थात् शांति शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास एवं शाश्वत मुल्यों में अभिवृद्धि संभव है।

दर्शन–दर्शन अंग्रजी भाषा को फिलॉसफी शब्द का रूपांतरण है जो ग्रीक भाषा के दो शब्द फिलॉस और सोफिया के मेल से बना है। **फिलोस का अर्थ है**–प्रेम अथवा अनुराग और सोफिया का अर्थ है–ज्ञान अर्थात् दर्शन की 'शाब्दिक अर्थ है ज्ञान के प्रति प्रेम। हिन्दी में दृश धातु से 'दर्शन' शब्द की उत्पत्ति हुई है, जिसका अर्थ है– देखना। इसका तात्पर्य यह भी है– दृश्यते अनेन इति दर्शनम् अर्थात् जिसे

देखा जाये, वही दर्शन है। देखा किससे जाए, क्या देखा जाए और क्यों देखा जाए– ये सवाल उठता है। दूसरे ‘शब्दों में दर्शन हमें अंतदृष्टि, विवेक एवं मन की आँखो से, परमसत्ता ईश्वर को मोक्ष की प्राप्ति के लिए सभी दुखों से मुक्ति अर्थात् लौकिक ही नहीं अलौकिक बातों को देखना का प्रयास है।

3. **गौतम बुद्ध एवं बौद्ध दर्शन**– गौतम बुद्ध एक महान दार्शनिक, धर्मगुरू एवं उच्च कोटि के समाज सुधारक थे। बुद्ध का जन्म लुंबिनी में 563 ईसापूर्व इक्ष्ताकु वंशीय राजा शुद्धोधन के घर में हुआ था। उनकी माँ का नाम महामाया था। इनका बालपन का नाम सिद्धार्थ था। सिद्धार्थ बचपन से ही भावुक प्रवृति के थे। सिद्धार्थ विवाह के के कुछ दिनों के बाद अपने नवजात शिशु राहुल एवं पत्नी यशोधरा का त्यागकर घर से निकल पडे। इन्होने संसार की जरा, मरण , दुखो से मुक्ति दिलाने के मार्ग की तलाश करने तथा दिव्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए जंगल मे कठोर साधना की । कई सालों की घोर तपस्या के बाद बोध गया बिहार में बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्ति हुई और वे सिद्धार्थ से बुद्ध बन गए। भगवान बुद्ध ने लोगों को मध्यम मार्ग का उपदेश दिया। उन्होने दुःख उसके कारण और निवारण के लिए अष्टांगिक मार्ग दस पारमिता, पंचशील आदि शिक्षाओं को प्रदान किये। बौद्ध भिक्षुओं ने बुद्ध के दर्शन को विभिन्न देशों में जाकर प्रसारित किया। बौद्ध शिक्षा संस्थानो (जैसे नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला आदि) में बिना भेद –भाव के सभी के लिए शिक्षा सुलभ थी। इन संस्थानों मे विदेशी छात्र भारतीय धर्म, साहित्य एवं शिक्षा पद्वति का गहन अध्यन करते थे और भारतीय संस्कृत को अपने देशों में बिखरते थे। आज भी दूरस्थ देशों के साथ हमारा सुसंगत राजनीतिक, आर्थिक, संबंध बना रहना कहीं बौद्ध शिक्षा की ही देन है। बुद्धा ने तत्कालीन समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर कर सत्य, अहिंसा, प्रेम का जो पाठ विश्व को पढाया उसका तत्कालीन समाज था, वर्त्तमान समय है और भविष्य भी रहेगा। बौद्ध शिक्षा दर्शन ने जीवन में बर्ताव की शुचिता पर जोर दिया और सदा साशियल लाईफ को उँचा ले जाने का प्रयत्न किया, जिसके कारण बौद्ध दर्शन का पूर्व में भी महत्वपूर्ण स्थान रहा और आज भी लोकप्रिय है। आज संपूर्ण विश्व में एक दसरे से आगे बढने की प्रतिस्पर्धा में द्वन्द–द्वेष, हिंसा की प्रवृति पनप रही है। आज के तकनीकी युग में विश्व के हरेक क्षेत्र में निवास करने वाले व्यक्ति विभिन्न तरह के संधर्षो एवं अशांत महौल में जीने को मजबूर है। आज बेईमानी के बाजार मे स्वार्थ के सिक्कों ने अपना दबदबा बना रहा है, पगड़ी उछाल की राजनीति अनैतिकता के आँगन में अठखेलियाँ कर रही है अन्याय की आग में ईमान को ईधन बनाया जा रहा है। छल – प्रपंच की छुरियों से विश्वसनीयता को धायल किया जा रहा है ऐसी विषम स्थिति में मुक्ति के लिए गौतम बुद्ध के शैक्षणिक फिलॉसफी को अपने आचरण में लाना आज की सार्वभौमिक आवश्यकता है।

बौद्ध धर्म का दुनिया के समस्त धर्मो में अभूतपूर्व स्थान है, इस धर्म ने जनमानस के उत्थान के मनोभाव को जन्म दिया **बहुजन हिताय– बहुजन सुखाय** का संदेश दिया। धर्म ’शांत सुखमय जीवन बिताने का मार्ग प्रशस्त करता है। लोगों का समानता, दया–प्रेम के साथ जीना सिखलाया। आज संपूर्ण

विश्व अशांत है। पत्नी–पति से, माँ–बेटा से ब्राहाण से, क्षत्रिय–क्षत्रिय से, वैश्य से, एक राज्य दूसरे राज्य से सब युद्वरत है। शत्रुता को शुत्रुता से नहीं मिटाय जा सकता वरन् शत्रुता को मित्रता से ही पराजित किया जाता है। स्वतंत्रता, बन्धुत्व, समता विकास को जातिवाद, एवं विश्वास रखता जीओं और जीने दो को मानता है। इतिहास के पन्ने को देखन पर पता चलता है कि भारत एवं चीन को छोडकर एशिया महादेश के प्रायः देश हिंसा प्रिय थे। बौद्ध धर्म के ष्शांतिवाद उपदेशों के प्रभाव स्वरूष् उनके मनः चिंतन में बदलाव स्वरूप शांति प्रियता आई , बौद्ध धर्म के इतिहास का एक भी पृष्ट ऐसा नही , जो रक्त – रंजित हो, बौद्ध धर्म के पास एक ही हथियार है ज्ञान एवं विवेक और उसका एक ही ष्शत्रुा है अज्ञानता विश्व ष्शांति की स्थापना में बौद्ध धर्म अतीत में योगदान देने वाला साधन रहा है, इस समय भी है और आगे भी रहेगा।

4. **शोध समस्या चयन का औचित्यः** मनोविश्लेषण का सिद्वान्त मानव के व्यक्तित्व एवं मन के विचारों के पीछे के बीहड जंगल के अंधकार की अभिव्यक्ति है, जो यथार्थ रूप में अनुभूतियों व वेदना के माध्यम से उभर कर अपनी छिपी हुई अनैतिकता, भय त्रास धुटन, काम वासना की अतृप्त इच्छाएँ और समाज व संस्कारों के कारण पीछे छुपी वह चेतना है, जो स्फूटित होकर अपनी अभिव्यक्ति से कुछ संतोष प्राप्त करती है। मनोविश्लेषण से तात्पर्य मन का विश्लेषण अर्थात् मन के अंदर छुपी हुई मूल प्रवृतियों के अध्ययन से है। मनोविश्लेषण वाद के प्रवर्तक डॉ0 सिगमण्ड फ्रायड है। फ्रायड के अनुसार मनोविश्लेषणवाद हमें यह जानकारी देता है कि किस प्रकार मानव मन ही मानव की गतिविधियों एवं अभिव्यक्तियों के आधार है। बौद्ध दर्शन के मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन से तात्पर्य बौद्ध दर्शन के ऐसे पहलूओं का अध्ययन करना है। जो मानव मन– मस्तिष्क के कुंठित एवं संकीर्ण विचार– धाराओं में बदलाव में कारगर रहा है। इतिहास के पन्ने इस बात के साक्षी है कि बौद्ध दर्शन पे तत्कालीन समाज की परिस्थितियों, लोगों के सोचने समझने के तरीकों में किस तरह बदलाव लाय। बुद्ध के पंचशील के सिद्वांत के पालन से मनुष्य को प्रज्ञा, शील, मैत्री करूणा जैसे मूल्यों की स्थापना में सहयोग देता है और इस प्रकार समाज में शांति एवं अंहिसा की स्थापना कर सकता है, हिंसा, चोरी, डकैती, अपहरण, रिश्वत व भ्रष्टाचार जैसे अनैतिक कार्यो को कभी पंचशील द्वारा रोकना सम्भव है। समसामायिक ज्ञान जगत मनुष्य को अव्यावहारिक एवं अकर्मण्य बनाता जा रहा है। वर्तमान शिक्षा का ध्येय सिर्फ उपाधियाँ प्रदान करना रह गया है न कि ज्ञान वृद्वि करना। व्यक्ति का सर्वागीण विकास यथा– मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास ही बौद्ध दर्शन का मुख्य ध्येय था। इस ष्शोध द्वारा बौद्ध दर्शन में उपलब्ध विचारों, प्रत्ययों का मनोविश्लेषण कर उनके बौद्ध दर्शन में व्याप्त शांति के प्रत्ययों को वर्तमान समाज में वर्तमान शिक्षा पद्वति में किस प्रकार पुनः अनुप्रयोग किय जाए पर प्रकाश डालने की कोशिश है जिससे वर्तमान शिक्षा पद्धति समुन्नत सोदेश्यपरक तथा सर्वग्राहा हो सके। सर्वत्र सुख शांति भाई–चारा, मानवतावाद स्थापित हो सके।

5. **शोध कथन**– संप्रदायिकता, जातीयता, भाषावाद, क्षेत्रीयतावाद, हिंसा जैसी कुत्सित भावनाओ व समस्योओं ने संपूर्ण विश्व पर कब्जा कर रखा है, शालेय परिसर से लेकर सर्वत्र अराजकता फैली प्रतीत हो रही हे आज बौद्ध दर्शन के मनोविश्लेषणात्मक पद्वति को शांति शिक्षा को पाठ्क्रम में स्थापित कर बौद्ध दर्शन को पुनः नवीन रूप में समाज में कैसे प्रस्तुत किया जाना सम्भव है? बौद्ध दर्शन कैसे शांति शिक्षा को प्रभावित कर रहा है तथा शांति शिक्षा में बौद्ध–दर्शन का क्या योगदान है? इसी का अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध का समस्यात्मक रूप में कथन अग्रलिखित रूप में है–

शांति शिक्षा के संदर्भ में बौद्ध दर्शन का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन।

<u>प्रयुक्त शब्दों की परिभाषाएँ</u>

शांति शिक्षा

शांति शिक्षा से तात्पर्य है उस ऐजूकेशन से है जो प्राणी में मानवीयता दया स्नेह सहयोग सद्भावना, सामंजस्य, अभय नैतिकता और अहिंसा की भावना जागृत कर सके और उसके व्यवहार में परिवर्तन कर सके।

बौद्ध दर्शन

बोद्ध दर्शन से अभिप्राय उस दर्शन से है जो भगवान बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा बढ़ाया गया और बाद में पूरे विश्व में उसका प्रसार हुआ।

मनोविश्लेषण

मनोविश्लेषण मनोविज्ञान की एक शाखा है जिसके अंतर्गत व्यक्ति के मन के अंदर छुपी उन जटिलताओं का अनुसंधान किया जाता है जो उनके स्वस्थ व्यवहार में व्यवधान उत्पन्न करते है।

6. शोध की आवश्यकता एवं महत्व

ऐजूकेशन मानव के सर्वागीण विकास, सोसाईटी की चतुर्मुखी प्रगति और सभ्यता की बहुमुखी प्रगति की आधारशिला है। प्रचीन आध्यात्मिक मान्यताओं के कारण अपने को आत्मा मानते हुए हमारे भारत में भौतिक वादी सुख – सुविघाएँ, संकीर्णता आदि को हमेशा गौव स्थान दिया गया है। हमारी भारतीय परम्परा स्वस्थ, सुखी चरित्रवान, ज्ञानवान सज्जन, परिवार, सोसाईटी एवं देश के सर्वागीण प्रगति के लक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए निर्मित की गई है। अतः सहिष्णुता प्रेम, दया परोपकार, सहयोग, मैत्री, अहिंसा, आदि उत्कृष्ट नैतिक मूल्यों से **वसुधैव कुटुम्बकम** के विचार का विकास करना सदैव से ही हमारी संस्कृति का उदेश्य रहा है। परन्तु आज की वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर अंग्रेजी शासन अर्थात्

पाश्चात्य संस्कृति की छाप है, जिससे वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कृत्रिमता, बनावटीपन भरे वातावरण के समावेश के फलस्वरूप यह अपने स्वाभाविक भारतीय परिवेश में समुचित सामंजस्य सृजित कर पाने में असमर्थ है अतः ऐजूकेशन वास्तविक जीवन से परे, व्यावहरिकता से बहुत दूर औपचारिकता के शिकंजो में फंसने से अपना मूल स्वरूप और उदेश्य खो बैठी है। वर्तमान ऐजूकेशन सिस्टम सर्टिफिकेट एवं डिग्रियाँ प्रदान करने का साधन मात्र बन गई है। अनुशासनहीनता, कदाचार, अभद्र व्यवहार, अनैतिकता, शिक्षक–शिष्य के बीच संबंध में पवित्रता की कमी सर्वत्र देखने को मिल रही है। प्राचीन जीवन मूल्यों में कमी हो रही है। आज संपूर्ण देश एवं विश्व में आपसी द्वन्द्व विद्रोह, अन्याय, युद्व, उन्माद के रूप में नैतिक मूल्यों में तेजी से कमी परिलक्षित हो रहा है। फलस्वरूप विद्यालय से लेकर परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व में हर जगह अराजकता, अशांति फैली प्रतीत हो रही है। वर्तमान विद्यालयों का आधार स्तम्भ बौद्ध कालीन ज्ञान केन्द्र माने जाते है। भारतीय बौद्ध शिक्षा प्रणाली अति प्राचीन अति गौरवशाली है, जिससे संपूर्ण विश्व मे बिना किसी भेद–भाव के सबको समान ऐजूकेशन प्रदान करने की प्रथा का आरम्भ हुआ। अतएव वर्तमान समाज में व्याप्त अशांति एवं दोषों को दूर करने हेतु शांति शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम में समावेश करने की आावश्यकता अनुभव की जा रही है और इसके लिए बौद्ध दर्शन के मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन कर उसमें व्याप्त विचारों में प्रासंगिकता का अनुमान लगाना ही वर्तमान अनुसंधान का उदेश्य है। वर्तमान में व्याप्त वैयक्तिक कुठांओं एवं आर्थिक विषमताओं को दूर कर समाज में शांति स्थापना के प्रयास हेतू शोधार्थी के ह्दय में तत्संबंधी समस्या के अध्ययन में रूचि जागृति हुई और परिणाम स्वरूप प्रस्तुत शोध शीर्षक को लिया गया। बौद्ध दर्शन सदैव से ही मानव कल्याण की ओर प्रवत रहा है। मानव कल्याण हेतू जन मानस मे मानवीय मूल्यों एवं उच्च आदर्शो को जाग्रत करने एवं स्थापना करने में सक्षम रहा है। मानव के मन का विश्लेषण कर उनके मन में सदैव अच्छे विचारों को समावेश करना, मन में बुरे विचारों को प्रविष्ट न होने देना, मन में उपस्थित बुरे विचारों को नष्ट करन देना बौद्ध दर्शन का ध्येय रहा है। बौद्ध दर्शन के अनुसार शिक्षा इस प्रकार होनी चाहिए कि शिक्षार्थी का मन सदैव शिक्षा दर्शन आदि के क्षेत्रों में नवीन– अनुसंधान की ओर प्रयत्नशील रहे। वर्तमान शिक्षा प्रणाली शिक्षक, छात्र एवं पाठयक्रम (त्रिधुवीय)तीनों को स्वीकार करता है लेकिन धर्म के लिए कोई स्थान नहीं जिसके परिणामस्वरूप नैतिकता, शांति का पतन शिक्षक, छात्र परिवार, समाज राष्ट्र सब में परिलक्षित हो रहा है। विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास हेतू पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा को सम्मिलित करना आवश्यक है। लेकिन वर्तमान धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में धार्मिक शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा के समन्वित रू‍प को एक पृथक शाखा, शांति शिक्षा के रूप में अपनाने की आवश्यकता है। सर्वप्रथम बौद्ध दर्शन ने ही बिना वर्ग–भेद के शिक्षा प्रणाली की ष्शुरूआत की। बौद्ध दर्शन के उपदेशों ने तत्कालीन समाज के विचारों को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंसा प्रिय राष्ट्रों को ष्शांतिप्रिय बनाने में इस दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान समाज में वर्ग –भेद, वर्ण–भेद , भाषावाद, क्षेत्रियवाद जैसे कई कुंठित वादों ने अपना वर्जस्व कायम कर सर्वधर्म समभाव एवं विश्व के बुद्दि जीवी वर्ग इस प्रकार के उपायों की खोज में लगे है, जिसे संपूर्ण विश्व में भाईचारा एवं सर्वधर्म

समभाव की भावना उत्पन्न की जा सके । बौद्ध दर्शन सदा से ही मनुष्य की पर्सनेलिटी का सर्वागीण विकास द्वारा मानव कल्याण एवं विश्व शांति की ओर अग्रसर रहा है इस दृष्टि से वर्तमान शोध समस्या का औचित्य स्वतः स्पष्ट हो जाता है।

7. **शोध अध्ययन के उदेश्य**

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैः–

1. शान्ति शिक्षा के सम्प्रत्यय, प्रारूप एवं आवश्यकताओं का अध्ययन करना।
2. शान्ति शिक्षा की मनोविश्लेषणात्मक अवधारणाओं का अध्ययन करना।
3. बौद्ध दर्शन के उदय, प्रारूप एवं अवधारणाओं का अध्ययन करना।
4. बौद्ध दर्शन की मनोविश्लेषणात्मक अवधारणाओं का अध्ययन करना।
5. शान्ति शिक्षा में बौद्ध दर्शन के मनोविश्लेषणात्मक योगदान का अध्ययन करना।
6. वर्तमान विश्व परिदृश्य में शांति की स्थापना एवं प्रसार हेतु शांति शिक्षा तथा बौद्ध दर्शन की मनोविश्लेषणात्मक रूप से उपादेयता का अध्ययन करना।

8. **संबंधित साहित्य की समीक्षा**

सम्बन्धित साहित्य से अभिप्राय ऐसे समस्त पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित और अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पना निमार्ण, अध्ययन की रूप रेखा तैयार करने तथा आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। प्रस्तुत शोध में कुछ पुस्तकों एवं शोध की समीक्षा की गई हैः–

राजेश सिंह ने (2009) बौद्ध दर्शन में शिक्षा की स्थिति, विस्तार एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता विषय पर प्रस्तुत शोध में पाया कि वर्तमान शिक्षा में बौद्ध दर्शन का समावेश कर हम वर्तमान समाज को पुनः एक बार सुशिक्षित, सुपोषित एवं सुरक्षित कर सकते है। बौद्ध शिक्षा जहाँ एक ओर लाखों करोड़ों लोगों में शिक्षा के माध्यम से प्राण फूँकने में समर्थ है।

डॅा वृन्दा सेन गुप्ता ने (2015) बौद्ध कालीन शिक्षा पद्वति विषय पर प्रस्तुत ष्शोध में पाया कि प्राचीन भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाने में बौद्ध कालीन शिक्षा पद्वति का महत्वपूर्ण योगदान है।

डॅा राखी गिरीराज धिंग्रा ने (2016) शांति शिक्षा के प्रति विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता और दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर प्रस्तुत शोध के निष्कषों में इंगित किया है कि स्त्री व पुरूष अध्यापकों में से स्त्री अध्यापिका ष्शांति शिक्षा के प्रति अधिक जागरूग हैं और स्त्री अघ्यापिकाओं का शांति के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है।

शुभम वर्मा ने (2016) बौद्ध और वैदिक परंपरा का पारस्परिक संबंध विषय पर प्रस्तुत शोध में पाया कि विचार बौद्ध के हों या वैदिक यदि उन्हें सही तरह से समझा जाए तथा जिस देश और जिस जगह से यह विचार उपजे है वहाँ के लोग तथा साहित्य से प्रमाण निकाले जाए तो यह दो विभिन्न धारा नहीं बल्कि एक ही प्रतीत होती है।

डॉं प्रमोदवल्लभ गोस्वामी ने 218 शांति और समन्वय के लिए अध्यापक विषय पर अपना शोध सम्पन्न किया।प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष में पाया विद्यालयों परिवेश में ष्शांति संस्कृति की स्थापना कर भावी नागरिकों में ष्शांति उन्मुख व्यवहार सुनिश्चित किया जा सकता है जो सम्पूर्ण विश्व में शांति के संदेश को संचारित कर सकेगा और प्रत्योक बालक स्वयं को विश्वसमुदाय का नागरिक अनुभूत कर सकेगा।

डॉं राखी गिरीराज धिंग्रा ने (2018) शांति शिक्षा का पाठयक्रम में एकीकरण शीर्षक से संबंधित अपनेशोध में पाया कि शांति शिक्षा वर्तमान समय की सबसे जरूरी आवश्यकता के रूप में देखा जा रहा हैं जिस हेतु शांति शिक्षा का पाठयक्रम में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है।

प्रान्शु समदर्शी ने (2018) किन्ही साहित्य पर बौद्ध धर्म–दर्शन का प्रभाव शीर्षक से संबंधित अपने शोध में पाया कि बौद्ध धर्म दर्शन से हिन्ही साहित्य धारा को एक नई गति मिली है, फिर भी इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है किय यह धारा वर्तमान राजनीतिक प्रभाव से अछूती रही है। दर्शन के मूल स्वर की उपेक्षा कर यह साहित्य सैद्वांतिक मूल्यों को नकारती रही

रेखा मल्ल ने (2019) वर्तमान दौर में बुद्ध के उपदेशों का महत्व विषय पर प्रस्तुत शोध में पाया कि बुद्ध के उपदेश आधुनिक में उतने ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है, जितने प्राचीन समय में थे आज भी बुद्ध क शिक्षा को अपनाने की जरूरत है।

बौद्ध दर्शन शांति शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अनेक ष्शोध हुए हैं। इतिहास साथी है बौद्ध धर्म अतीत से ही विश्व शांति स्थापना में अपना योगदान देता रहा है, मानव मन में द्वन्द द्वेष के भाव को प्रेम सद्भावना मं बदलता रहा है। अतः ष्शोधार्थी ने अपना ष्शोध प्रकरण, **शांति शिक्षा के संदर्भ में बौद्ध दर्शन का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन** को लिया।

9. अनुसंधान की विधि

शोध विधि शोध क्रिया को संपादित करने का एक ढंग है जो चयनित प्रकरण की प्रकृति द्वारा निर्धारित होता है। अनुसंधान विधि अनुसंधान समस्या संबंधित चरों को योजनानुसार नियंत्रित करने तथा समस्या का उत्तर प्राप्त करने की योजना संरचना एवं रणनीति होती है। यदि शोध का डिजाइन विशिष्ट और उपयुत्त्क तरीके से किया जाए तो निष्कर्षि परिणामों का सामान्यीकरण सम्भव हो पाता है। **सी0 सी0**

कोकार्ड के अनुसार शोध चिंतन की एक ऐसी कमबद्ध व विशिष्ट प्रविधि है जिससे विशिष्ट उपकरणों एवं यंत्रो तथा प्रतिक्रियाओं का उपयोग इस उदेश्य से किया जाता है ताकि एक समस्या का अधिक समुचित समाधान मिल सके।

अनुसंधान विभिन्न धटनाओं से संबधित चरों तथ्यों एवम् का तीन स्थितियों का अध्ययन करता है।

1 अतीत में उसका स्वरूप क्या था?

2 वर्तमान में उसका स्वरूप क्या था?

3 भविष्य में उसका स्वरूप क्या होगा?

इसके आधार पर अनुसंधानों को मुख्यतः निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है।

1 ऐतिहासिक अनुसंधान

2 वर्णनात्मक अनुसंधान

3 प्रयोगात्मक अनुसंधान

4 दार्शनिक अनुसंधान

प्रत्येक अनुसंधान में किसी न किसी विधि का अनुसरण किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त की गई शोध विधि निम्नलिखित प्रकार से हैः–

1 दार्शनिक विश्लेषणात्मक विधि

2 ऐतिहासिक विधि

दार्शनिक विश्लेषणात्मक विधि

शिक्षक क्षेत्र में दार्शनिक विधि का उपयोग महान चिन्तकों के विचारों आन्दोलनों संगठनों के अध्ययन के लिए किया जाता है। इस विधि का स्वरूप मूलतः व्याख्यात्मक है। इस विधि के अंतर्गत विचारों का विश्लेषण, सम्प्रत्ययों का विश्लेषण, समीक्षात्मक आंकलन तथा विभिन्न विचारों का धाराओं का वर्तमान परिपेक्ष्य में अपेक्षित योगदान का अध्ययन किया जाता है।

प्रस्तुत शोध में बौद्ध दर्शन से संबंधित विभिन्न प्रत्ययो एवं सिद्वान्तों का विश्लेषण एवं विवेचन करेंगें। बौद्ध दर्शन के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर इसके शैक्षिक विचारों को एक विशिष्ट परिपेक्ष्य में प्रस्तुत किया जा सकेगा।

ऐतिहासिक विधि

ऐतिहासिक अनुसंधान विधि मे ऐतिहासिक समस्याओं का विश्लेषण किया जाता है। जिसके फलस्वरूप इतिहास के संबंध एक नई आयाम प्राप्त होता है जिससे वर्तमान एवं भविष्य के लिए नए सामाजिक गतिविधि को आधार हो सके।

इतिहास ज्ञान के क्षेत्र में अतीत की धटनाओं का एकीकृत वर्णन है। प्रस्तुत शोध में बौद्ध दर्शन के इतिहास की रोशनी में उनके शैक्षिक विचारों, आदर्शो, दार्शनिक एवं मनेवैज्ञनिक दृष्टिकोण का अध्ययन किया जाएगा। इस अध्ययन में शांति शिक्षा एवं भारतीय समाज का भी ऐतिहासिक अध्ययन किया जाएगा। जिससे वर्तमान की समस्याओं का समाधान करने के लिए अतीत के पन्नों के स्वर्णिम वाक्यांशों को पुनः जीवन्त करने में सफलता की ओर कदम बढ़ाया जा सके। ऐतिहासिक अनुसंधान द्वारा भूत के आधार पर वर्तमान एवं भविष्य के लिए नवीन मार्ग उत्पन्न किए जाते है। क्योंकि भूतकालीन धटनाओं के परिणामों के गहन अध्ययन से उसके गुण–दोषों का पता चलता है।

10. शोध अध्ययन हेतू सूचना एवं आँकड़े प्राप्त करने की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बौद्ध दर्शन की प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतो से प्राप्त विषय वस्तु का विश्लेषण किया जाएगा, प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता उपलब्ध साहित्य के तथ्यों का विश्लेषण करेगा और क्रमबद्व रूप में व्यवस्थित कर तार्किकता सहित विवचना करेगा।

11. शोध हेतू अध्ययों की क्रमबद्व योजना

प्रस्तुत शोध के व्यवस्थित एवम् विशिष्ट अध्ययन के लिए शोधार्थी ने उसका क्रमवार अध्याय विभाजन किया है ताकि लक्षित ध्येय की पूर्ति , समझ , शोध में सुविधा हो । शोधार्थी ने प्रस्तावित शोध शांति षशिक्षा के संदर्भ में बौद्ध की दर्शन की मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करना को मुख्यतः आठ अध्यायों में विभाजित किया है, जो इस प्रकार हैः–

प्रथम अध्याय

- प्रस्तावना

- शिक्षा का अर्थ परिभाषा
- शिक्षाका भारतीय एवं वैश्विक परिद
- शांति शिक्षा प्रत्यय उद्भव परिभाषा
- बौद्ध दर्शन (उद्भव संदेश)
- मनोविश्लेषण
- शोध समस्थाके चयन का औचित्य
- समस्या का कथन उदेश्य
- शोध विधि एवं शोध प्रारूप
- शोध के स्त्रोत
- परिसीमन

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य की समीक्षा

- प्रस्तावना
- साहित्य समीक्षा का अर्थ
- सहित्य समीक्षा की परिभाषा
- साहित्य समीक्षा के उदेश्य
- भारतीय शोध साहित्य की समीक्षा
- पश्चात्य शोध साहित्य की समीक्षा
- समीक्षात्मक निष्कर्ष

तृतीय अध्याय

- शांति शिक्षा का प्रत्यय
- शांति शिक्षा की आवश्यकताएँ
- शांति शिक्षा की मनोविश्लेषणात्मक अलचणाएँ

चतुर्थ अध्याय

- **बौद्ध दर्शन**

- बौद्ध दर्शन भूमिका
- बौद्ध दर्शन की उत्पति , सार तत्व
- बौद्ध दर्शन की मनोविश्लेषणात्मकअवधारणाएँ
- वर्तमान परिपेक्ष्य में बौद्ध दर्शन के मनोविश्लेषणात्मक अवधारणाओं का अनुपालन

पंचम अध्याय

- शांति शिक्षा एवं बौद्ध दर्शन का मनोविश्लेषात्मक सह संबंध

षष्ठ अध्याय

- शोध उदेश्यों की प्राप्ति एवं परिणाम

सप्तम अध्याय

- शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

12. शोध प्रबंध की परिसीमाएँ

समस्या का स्वरूप साधारणत अधिक व्यापक है। समस्या का व्यावहारिक रूप से अध्ययन करने के लिए परिसीमन करना अत्यंत आवश्यक है। चूंकि समय व साधन किसी भी समस्या के अध्ययन की प्रभावित करते हैं, अतः समस्या का परिसीमन करना महत्वपूर्ण होता है।

शोध विषय की व्यापकता के कारण शोधर्थी को अपने अध्ययन को निम्नलिखित परिसीमाओं के भीतर ही समन्वित किया हैः।

- प्रस्तुत शोधकार्य के वैधत एवं विश्वसनीयता को ध्यान में रखते हुए बौद्ध साहित्य के साक्ष्यों तथा शांति शिक्षा के संकल्पनाओं को आधार मानकर प्रस्तुत किया गया है।
- प्रस्तुत शोधकार्य को अधिक विस्तृत ने करने के उददेश्य तथा समयाभाव को दृष्टिगत रखते हुए बौद्ध दर्शन के केवल मनौवैज्ञानिक पक्ष की व्याख्या तक ही सीमित रखा गया है।
- प्रस्तुत शोधकार्य में शांति शिक्षा के आयामों को मनोवैज्ञानिक अध्ययन तक ही सीमित रखा गया है।
- प्रस्तुत शोध में बौद्ध दर्शन साहित्य की अधिक विवेचना न करके उसके शांति के क्षेत्र में योगदान पर ही बल दिया गया है।

13. संदर्भ ग्रंथ सूची

- एन0सी0ईआर0टी, (2010) आधार पत्र, **शांति के लिए शिक्षा, नई दिल्ली एन0 सी0 ई0 आर0टी0 के प्रकाशन विभाग।**
- कौल लोकेश, (2010), **शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली**, नोएडा, विकास पब्लिकेशन हाउस
- कुमार डॉ0 रवीन्द्र, डंगवाल डॉ किरन लता (2017)**मूल्य एवं शांति शिक्षा**, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन
- त्यागी गुरसरनदास, (2014–15), भारतीय शिक्षा का इतिहास एवम् विकास, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन
- त्यागी जी0 एस0डी0, पाठक पी0डी0, (2007/2008)भारतीय शिक्षा की सम सामयिक समस्याएं, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन
- बिहारी रमन, ;2010), **शिक्षा के दार्शनिक आधार, मेरठ**, आर लाल बुक डिपो
- भटनागर डॉ ए0 बी0 भटनागर डॉ अनुराग, (2013) **शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली**, मेरठ आर लाल बुक डिपो।
- मंगल एस0 के0 (2008) **शिक्षा मनोविज्ञान**, नई दिल्ली ,पी0 पच0 आई0 लर्निग प्राइवेट लिमिटेड।
- माथुर एस0 एस0, (2010) **शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार, आगरा**, अग्रवाल पब्लिकेशन।
- शर्मा डॉ ए0, (2008), **मानव मूल्य एवम् शिक्षा, मेरठ**, आर लाल बुक डिपों
- शर्मा आर ए0, (2008) **मानव मूल्य एवम् शिक्षा, मेरठ** आर लाल बुक डिपो
- शर्मा चन्द्रधर, (1998) **भारतीय दर्शन**, दिल्ली, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स
- सिंह अरूण कुमार, (2013) **उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान**, दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास
- सिंह अरूण कुमार, (2012) **आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान**, दिल्ली, मोमीलाल बनारसी दास